पाठ–3

छोटा जादूगर

जयषंकर प्रसाद

जन्म– 1889 ई.

मृत्यु– 1937 ई.

लेखक परिचय

जयशंकर प्रसाद एक युग प्रवर्तक रचनाकार थे, जिन्होंने एक साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिन्दी को गौरवान्वित करने वाली कृतियों का सृजन किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रसाद का गौरव अक्षुण्ण है। काशी के प्रसिद्ध 'सूंघनी साहू' परिवार में जन्म, आरम्भिक शिक्षा और जीवन समृद्धता से प्रारम्भ हुआ, किन्तु 17 वर्ष की उम्र में प्रसाद पर आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा। प्रसाद ने धीरता और गम्भीरता से विषमताओं का सामना किया।

प्रसाद के साहित्य में प्रकृति के सचेतन रूप के साथ–साथ मानव के लौकिक व पारलौकिक जीवन की जैसी विविधतापूर्ण झाँकी प्रस्तुत की गयी है, वैसी आधुनिक युग के अन्य किसी कवि में नहीं मिलती है। कवि के रूप में वे निराला, पन्त, महादेवी के साथ छायावाद के चौथे स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। नाट्य लेखन में स्वर्णिम इतिहास को आधार बनाकर गौरवशाली भारतवर्ष का रेखांकन कर उस समय के जनमानस में आत्म चेतना का संचार किया। कहानी और उपन्यास के माध्यम से मानवीय करूणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक अनावृत पक्षों का उद्घाटन किया।

कृतियाँ

कानन कुसुम, महाराणा का महत्त्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी (काव्य), स्कदगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री (नाटक), छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, इन्द्रजाल (कहानी संग्रह), कंकाल, तितली, इरावती (उपन्यास) ।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र एक छोटा लड़का है । जो अपनी असहाय अवस्था में आजीविका के लिए जादू के करतब दिखाता है तथा लेखक के सामने भी अपनी कला का प्रदर्शन करता है । अपनी दीन स्थिति में भी किसी के सामने हाथ न फैलाकर जीवन के संघर्षों का साहस के साथ मुकाबला करके स्वाभिमान पूर्वक जीवन जीने का प्रयास करता है । बाल सुलभ करूणा के साथ दायित्व बोध इस बालक के माध्यम से प्रसाद ने कहानी में जीवन्त किया है। छोटा जादूगर के नाम से सम्बोधित करने को कहना उस लड़के की अपने कर्म के प्रति दृढ़ता और निष्ठा का परिचायक है। इसी कारण मुख्य पात्र की विपन्नावस्था में भी पाठकों के मन में सहानुभूति से अधिक आदर की भावना उत्पन्न होती है । कहानी मानवीय संवेदनाओं को झंकृत करने में भाव एवं भाषा की दृष्टि से समर्थ है।

छोटा जादूगर

(1)

''कार्निवाल' के मैदान में बिजली जगमगा रही थी । मैं खड़ा था फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीनेवालों को देख रहा था । उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी–सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे । उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखाएँ थीं । मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ!

''मैंने पूछा, क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा ?''

''मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं । तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौने पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ । जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है । उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ।'' उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा ।

मैंने पूछा, ''और उस पर्दे में क्या हैं ? वहाँ तुम क्यों गये थे ?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सकता । टिकट लगता हैं ।''

मैंने कहा, ''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको ले चलूँ ।''

उसने कहा– ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा ? चलिए निशाना लगाया जाये।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा– ''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाये।''

हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, ''तुम्हारे और कौन हैं ? ''

''माँ और बाबूजी। ''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिये मना नहीं किया ?''

''बाबूजी जेल में हैं ।''

''क्यों ?''

''देश के लिये'', वह गर्व से बोला ।

''और तुम्हारी माँ। ''

''वह बीमार है ।''

''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी । उसने कहा, तमाशा देखने नहीं, दिखाने आया हूँ । कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा । मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह–चौदह वर्ष के बालक को देखने लगा ।

''हाँ, मैं सच कहता हूँ, बाबूजी ! माँ बीमार है, इसलिये मैं नहीं गया ।''

''कहाँ ?''

''जेल में । जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ ?

मैंने उससे कहा– अच्छा, चलो निशाना लगाया जाये । हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था । मैंने बारह टिकट खरीद कर उस लड़के को दे दिये ।

वह निकला पक्का निशानेबाज, उसकी कोई गेंद खाली नहीं गयी ।

देखने वाले दंग रह गये । उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे। कुछ मेरे रूमाल में बाँधे, कुछ जेब में रख लिये ।

(2)

कलकत्ता के सुरम्य बोटेनिकल उद्यान में, लाल कमलिनी से भरी हुई, एक छोटी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ, मैं जलपान कर रहा था। इतने में वह छोटा जादूगर दिखाई पड़ा । मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा ।

''बाबूजी नमस्ते । आज कहिए तो खेल दिखाऊँ ? ''

''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं ।''

''फिर इसके बाद क्या गाना बजाना होगा, बाबूजी ।''

''नहीं जी– तुमको ''मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था । श्रीमती ने कहा, ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आये । भला कुछ मन तो बहले।'' मैं चुप हो गया क्योंकि श्रीमती की वाणी में माँ की सी वह मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता । उसने खेल आरम्भ किया ।

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। बिल्ली रूठने लगी । भालू मनाने लगा । बंदर घुड़कने लगा । गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला । लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था । सब हँसते–हँसते लोट–पोट हो गये ।

ताश के पत्ते लाल हो गये । फिर अब काले हो गये । गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े होकर जुड़ गयी । लट्टू अपने आप नाच रहे थे । मैंने कहा, ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जायेंगे ।''

श्रीमती जी ने धीरे से एक रूपया दे दिया । वह उछल पड़ा । मैंने कहा 'लड़के'

''छोटा जादूगर कहिये, यह मेरा नाम है । इसी से मेरी जीविका है।''

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा, ''अच्छा, तुम इस रूपये से क्या करोगे?''

''पहले भर–पेट पकौड़ी खाऊँगा । फिर एक सूती चादर लूँगा ।''

मेरा क्रोध अब लौट आया । मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं ! उसके एक रूपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न !

वह नमस्कार करके चला गया ! हम लोग कुन्ज देखने के लिए चले । रह–रह कर छोटे जादूगर का स्मरण होता था । सचमुच वह एक झोपड़ी के पास चादर कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, ''तुम यहाँ कहाँ?''

''मेरी माँ यहीं है न ! अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया ।'' मैं उतर गया । उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों में लिपटी काँप रही थी ।

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर डालकर उसके शरीर से लिपटते हुए कहा, ''माँ।''

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े ।

(3)

एक दिन कलकत्ते के उस उद्यान को फिर देखने की इच्छा से मैं अकेले ही चल पड़ा । दस बज चुके थे । मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंग–मंच सजा था । मोटर रोक कर उतर पड़ा । वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था । ब्याह की तैयारी थी । पर यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में प्रसन्नता की तरी नहीं थी मानों उसके रोयें रो रहे थे । मैं आश्चर्य से देख रहा था । खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा । वह जैसे क्षण भर के लिये स्फूर्तिमान् हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा था कि आज तुरन्त चले आना । मेरी घड़ी समीप है।'' अविचल भाव से उसने कहा ।

''तब भी तुम खेल दिखाने आये !'' मैंने कुछ क्रोध से कहा । उसने कहा, ''क्यों नहीं आता ? ''

और कुछ कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था । क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गयी । उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बिठाते हुए मैंने कहा, ''जल्दी करो।'' मोटरवाला मेरे बताये हुए पथ पर चल पड़ा ।

कुछ ही मिनट में झोंपडे के पास पहुँचा । जादूगर दौड़कर झोपड़े में माँ–माँ पुकारते हुए घुसा । मैं भी पीछे था । किन्तु स्त्री के मुँह से, 'बे.....' निकलकर रह गया । उसके दुर्बल हाथ उठकर रह गये । जादूगर उससे लिपटकर रो रहा था, मैं स्तब्ध था । उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू–सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा ।

शब्दार्थ –

कार्निवाल– जनता के मनोरंजन की, मेले के ढंग की योजना है जिसमें खेल, व्यायाम के अद्भुत प्रदर्शन, जादू के खेलों तथा गीत, नृत्य और अभिनय आदि का समावेश रहता है । इसमें कई तरह के टिकट लगते हैं ।

विषाद– दुःख	प्रगल्भता –गम्भीरता, तीक्ष्ण दृष्टि
तिरस्कार– अपमान, अनादर	पथ्य– रोगी के लिए सुपाच्य भोजन
सुरम्य– बहुत सुन्दर	कमलिनी–छोटे कमल
मस्तानी– मतवाली	घुड़कने–क्रोध से डराने का हाव–भाव
वाचालता– बात करने में निपुणता	जीविका–भरण–पोषण का साधन
कुन्ज–पौधों या लताओं से ढका हुआ स्थान	चिथड़ों–फटे पुराने वस्त्र
स्फूर्तिमान– ऊर्जावान	अविचल –स्थिर, अटल

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छोटा जादूगर के पिता जेल में क्यों थे ?

   क. चोरी के कारण ख. मारपीट के कारण

   ग देश के लिए घ नशे के कारण

2. निशाना लगाकर छोटा जादूगर ने कितने खिलौने बटोर लिए ?

   क. दस ख. आठ

   ग. तेरह घ. बारह

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'कार्निवाल' क्या है ? समझाइए

4. ''जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं तो मै क्यों न दिखाकर अपना पेट भरूँ।''

   I. ये शब्द किसने और किससे कहे ?

   II वह खेल दिखाकर क्यों अपनी जीविका चलाता था ?

5. मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा – ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?''

   I किसने, किससे और कहाँ पूछा ?

   II उसने क्या उत्तर दिया ?

   III उसके बाद क्या घटना घटित हुई ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. बताइये कि इस पाठ का शीर्षक 'छोटा जादूगर' कहाँ तक उपयुक्त है ? क्या आप इसके लिए कोई दूसरा उपयुक्त शीर्षक दे सकते हैं ?

7 निम्नलिखित मुहावरों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

हँसी फूट पड़ना, दंग रहना, हँसते–हँसते लोट–पोट होना, पीठ थपथपाना, पैसे बटोरना ।

8. निम्नलिखित शब्दों का एक–एक पर्यायवाची शब्द दीजिए :–

निशाना, विषाद्, तिरस्कार, अभिनय ।

9 रेखांकित शब्दों के व्याकरण की दृष्टि से शब्द भेद बताइये :–

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर डालकर उसके शरीर से लिपटते हुए कहा ''माँ''

निबन्धात्मक प्रश्न

10. छोटे जादूगर में आपको जो गुण दिखलाई पड़ते है, उन्हें उदाहरण देकर बताइये।

11 I. इस कहानी में कहानीकार का क्या उद्देश्य छिपा हुआ है ?

II. इस कहानी से आप क्या प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. (क)
2. (ख)

•••